7

बाबा मैं न काहू का

बाबा ! मैं न काहू का, कोई नहीं मेरा रे ।।बाबा.।।टेक।।
सुर नर नारक तिरयक गति मैं,
मो कों करमन घेरा रे ।।१।।बाबा.।।

मात पिता सुत तिय कुल परिजन, मोह गहल उरझेरा रे ।
तन धन बसन भवन जड़ न्यारे,
हूँ चिन्मूरत न्यारा रे ।।२।।बाबा.।।

मुझ विभाव जड़ कर्म रचत हैं, करमन हमको फेरा रे ।
विभाव चक्र तजि धारि सुभावा,
अब आनन्दघन हेरा रे ।।३।।बाबा.।।

खरच खेद नहीं अनुभव करते, निरखि चिदानन्द तेरा रे ।
जप तप व्रत श्रुत सार यही है,
बुधजन कर न अबेरा रे ।।४।।बाबा.।।

हे भाई! इस जगत में मेरा किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, न तो मैं किसी का हूँ और न ही कोई मेरा है।

मुझे तो स्वर्ग, नरक, तिर्यन्च और मनुष्य इन चार गतियों में कर्मों ने मेरी स्वयं की भूल से बाँध रखा है।

माता–पिता, पुत्र–पत्नी, कुल–परिवारजन ये सब मोह के कारण होने से मुझे उलझाने वाले है तथा तन, धन, वस्त्र, भवन आदि ये जड़ पदार्थ तो मुझसे अत्यंत भिन्न हैं और मैं तो इनसे पृथक चैतन्यमूर्ति न्यारा तत्त्व हूँ।

मेरे में उत्पन्न होने वाले विकारी भाव पुद्गल कर्मों द्वारा उत्पन्न किये गये हैं, उन कर्मों ने हमें परेशान कर दिया है, अतः अब मैंने विभावी भावों के चक्र का त्यागकर अपने स्वभाव को धारण कर लिया है, तथा अब मैंने आनन्द स्वभावी आत्मा को देख लिया है अर्थात् उसका अनुभव कर लिया है।

अतः बुधजन कवि कहते हैं कि जब से मैंने अपने चैतन्य आनन्द स्वभावी आत्मा को देख लिया है तब से मैं किंचित भी दुःख का अनुभव नहीं करता हूँ। समस्त जप, तप, व्रत और जिनागम का भी यही सार है, अतः हे जीव! अब तुझे आत्मकल्याण में देर नहीं करनी चाहिये।